वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :5 अंक : 194 | मंगलवार 11 नवम्बर 2025 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

सौरभ जैन ने रचा इतिहास

30 घंटे की Non-Stop स्पीच देकर बनाया विश्व रिकॉर्ड

"सीखेगा भारत, तभी तो आगे बढ़ेगा भारत" के संदेश के साथ जयपुर के बिरला ऑडिटोरियम में बना देश का सबसे बड़ा ज्ञान महाकुंभ

जयपुर. शाबाश इंडिया

प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर सौरभ जैन ने जयपुर के बिरला ऑडिटोरियम में आयोजित जयपुर लर्निंग फेस्टिवल 2025 में 30 घंटे लगातार बोलकर नया विश्व रिकॉर्ड बनाया। "सीखेगा भारत, तभी तो आगे बढ़ेगा भारत" थीम पर आधारित इस ऐतिहासिक आयोजन में सौरभ जैन ने बिना बैठे, बिना खाए-पिए, बिना सोए और बिना बायो ब्रेक के 100 से अधिक विषयों पर Non-Stop स्पीच दी। यह प्रेरणादायक यात्रा 9 नवंबर सुबह 8:11 बजे शुरू हुई और 10 नवंबर दोपहर 2:11 बजे समाप्त हुई। इस उपलब्धि के साथ उन्होंने वर्ष 2022 में बनाए अपने 24 घंटे की स्पीच के रिकॉर्ड को तोड़ दिया।विश्व रिकॉर्ड बुक ऑफ इंडिया ने दी मान्यतावर्ल्ड रिकॉर्ड बुक ऑफ इंडिया (मुंबई) के सीईओ दुर्गेश पुरोहित, डॉ. पल्लवी सिंघवी और रोटेरियन उजास जैन पांड्या ने सौरभ जैन को दो विश्व रिकॉर्ड प्रमाणपत्र प्रदान किए —

30 घंटे लगातार Non-Stop स्पीच देना।

100 से अधिक विषयों पर बिना दोहराए और बिना नोट्स के बोलना। प्रमाणपत्र प्रदान किए जाने के क्षण पर पूरा ऑडिटोरियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।श्रोताओं ने "सौरभ जैन जिंदाबाद" के नारों से वातावरण को उत्साह से भर दिया। जयपुरवासियों का अभूतपूर्व उत्साहहजारों लोगों से भरे बिरला ऑडिटोरियम में सुभाषचंद्र जैन, प्रदीप जैन, विनोद जैन (कोटखावदा), नरेंद्र मित्तल, पदम कासलीवाल, राजकुमार बैद, जस्टिस नगेंद्र कुमार जैन, जस्टिस नरेंद्र कुमार जैन, कमल सचेती, सुधीर जैन गोधा, प्रमोद पहाड़िया, दिनेश बज, चक्रेश जैन, सुनीता जैन, विवेक काला, प्रज्ञा मेहता, पदम बिलाला, अशोक जैन कोटलर, महेंद्र बख्शी, अजय गोधा, राकेश गोदिका सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।समारोह में केक कटिंग, राष्ट्रगान और बैंड-बाजों के साथ सेलिब्रेशन किया गया। कार्यक्रम के अंत में सौरभ जैन को विंटेज कारों के काफिले में बैठाकर सम्मानपूर्वक विदा किया गया।आयोजन का उद्देश्य और सामाजिक प्रभावचीफ डायरेक्टर प्रमोद जैन (एमडीआर इन्फ्राटेक) ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य था —"सीखेगा भारत, तभी तो आगे बढ़ेगा भारत।" यानी शिक्षा, स्किल डेवलपमेंट और आत्मविकास के माध्यम से राष्ट्र निर्माण को नई दिशा देना। इस 30 घंटे के आयोजन में सेल्फ डिस्कवरी, माइंडसेट मास्टरी, अपस्किलिंग और अनस्टॉपेबल ग्रोथ जैसे विषयों पर चर्चा की गई। @... पेज 2 व 3 पर

सौरभ जैन ने 30 घंटे नॉन स्टॉप स्पीच देने का बनाया वर्ल्ड रिकार्ड

जयपुर. शाबाश इंडिया

प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर सौरभ जैन ने जयपुर के बिरला ऑडिटोरियम में आयोजित जयपुर लर्निंग फेस्टिवल 2025 में 30 घंटे लगातार बोलकर नया विश्व रिकॉर्ड बनाया।"सीखेगा भारत, तभी तो आगे बढ़ेगा भारत" थीम पर आधारित इस ऐतिहासिक आयोजन में सौरभ जैन ने बिना बैठे, बिना खाए-पिए, बिना सोए और बिना बायो ब्रेक के 100 से अधिक विषयों पर Non-Stop स्पीच दी। सौरभ जैन की प्रेरक यात्रासाधारण परिवार से निकलकर गाँव के स्कूल में पढ़े सौरभ जैन ने संघर्षों के बीच सफलता की नई परिभाषा लिखी।एक गंभीर दुर्घटना में ब्रेन हैमरेज के बाद डॉक्टरों ने उन्हें कम बोलने की सलाह दी थी, परंतु उन्होंने इस चुनौती को प्रेरणा में बदल दिया। 2018 में: 16 घंटे 18 मिनट की Non-Stop स्पीच2022 में: 24 घंटे 03 मिनट की स्पीच2025 में: 30 घंटे की विश्व रिकॉर्ड स्पीचमीडिया प्रभारी विनोद जैन (कोटखावदा) और राजकुमार बैद ने बताया कि जैन ने पिछले 8 वर्षों तक तैयारी, 40,000 घंटे का अध्ययन और विश्व स्तरीय ट्रेनर्स से प्रशिक्षण लेकर यह रिकॉर्ड बनाया।संस्थाओं का सहयोग और आयोजन की भव्यताप्रोजेक्ट डायरेक्टर सुधीर जैन गोधा ने बताया कि आयोजन में 700 से अधिक संस्थाओं और 250 विशेषज्ञों का सहयोग रहा। दोनों दिनों में 25,000 से अधिक लोगों ने उपस्थिति दर्ज कराई। कमल सचेती और दिनेश जैन बज ने बताया कि सुरक्षा, तकनीकी, भोजन, रजिस्ट्रेशन और मीडिया की सभी व्यवस्थाएँ सटीक थीं।सभी प्रतिभागियों को सर्टिफिकेट ऑफ पार्टिसिपेशन प्रदान किया गया, जबकि जिन्होंने 9 घंटे या अधिक समय तक स्पीच सुनी, उन्हें वर्ल्ड रिकॉर्ड सर्टिफिकेट भी मिला। कार्यक्रम में सेल्फी कॉन्टेस्ट और मोटिवेशनल प्रतियोगिताएँ भी आयोजित हुईं।समापन समारोह में राजस्थान जैन सभा, रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, वैश्य महासम्मेलन, विभिन्न कॉलेजों और 30 से अधिक सामाजिक संस्थाओं ने सौरभ जैन का अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राजीव जैन और मृदुला पाटनी ने किया, जबकि प्रमोद पहाड़िया ने आभार व्यक्त किया।

रिपोर्ट :
राकेश गोदिका (मीडिया प्रभारी)

सौरभ जैन ने 30 घंटे नॉन स्टॉप स्पीच देने का बनाया वर्ल्ड रिकार्ड

सीखेगा भारत, तभी तो आगे बढ़ेगा भारत" थीम पर आधारित इस ऐतिहासिक आयोजन में सौरभ जैन ने बिना बैठे, बिना खाए-पिए, बिना सोए और बिना बायो ब्रेक के 100 से अधिक विषयों पर Non-Stop स्पीच दी।यह प्रेरणादायक यात्रा 9 नवंबर सुबह 8:11 बजे शुरू हुई और 10 नवंबर दोपहर 2:11 बजे समाप्त हुई।

वेद ज्ञान

बच्चों के खुशहाल भविष्य के लिए घर रखें फेंगशुई गाय

भारतीय संस्कृति में गाय को मां का दर्जा प्राप्त है। ऐसी मान्यता है कि जिस जगह पर बैठकर गाय सांस लेती है उस जगह के आसपास मौजूद सभी वास्तु दोष समाप्त हो जाते हैं। वास्तु और फेंगशुई दोनों के अनुसार गाय को घर में रखना शुभ माना जाता है। मगर अब शहरों में रहने वाले लोगों के लिए असली गाय को घर में रख पाना आसान काम नहीं है। ऐसे में वास्तु के अनुसार आप अपने घर में पीतल या फिर सफेद और गोल्डन रंग से बनी पत्थर की गाय रखकर भी घर के वास्तु दोष दूर कर सकते हैं। पिछले समय में जब भी कोई नए घर का निर्माण करता था तो सबसे पहले उस जगह पर गाय लाकर बांध दी जाती थी, ताकि उस जगह पर मौजूद सभी वास्तु दोष खत्म हो जाए और घर निर्माण से जुड़े सभी कार्य बिना किसी अड़चन के पूरे किए जा सकें। ऐसे में यदि आप भी नए घर में प्रवेश या फिर निर्माण करने जा रहे हैं तो उस जमीन या फिर जगह पर पीतल या फिर सफेद और गोल्डन रंग की गाय जरुर रखें ताकि उस जगह की सारी नेगेटिव एनर्जी समाप्त हो जाए। अगर आप चाहते हैं कि आपका बच्चा विदेश जाकर पढ़ाई-लिखाई करे, तो आज से ही उसके कमरे में पीतल से बनी गाय की मूर्ति स्थापित करें। ऐसा करने से न केवल आपका बच्चा उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाएगा बल्कि पढ़ाई-लिखाई में उसका ध्यान भी अच्छे से केंद्रित होगा। वास्तु के अनुसार गाय मानसिक शांति और आपकी हर मनोकामना पूरी करने की ताकत अपने पास रखती है। शायद यही वजह है कि गाय को मां का दर्जा प्राप्त है। यदि आप अपने घर के मंदिर या फिर कहीं भी सफेद और गोल्डन रंग की गाय रखते हैं तो इससे आप और आपके परिवार को मानसिक शांति और सुख का एहसास हर दम रहेगा। यदि आप घर में बछड़े को दूध पिलाती गाय घर में रखते हैं तो संतान का सुख आपको बहुत जल्द प्राप्त होता है। साथ ही पैदा होने वाली संतान संस्कारी और भरपूर गुणों वाली भी होती है। वास्तु के अनुसार गाय को 33 करोड़ देवी-देवताओं का वास माना जाता है। ऐसे में यदि आप घर में गाय की मूर्ति या फिर तस्वीर लगाते हैं तो आपके ऊपर इन सभी देवी-देवताओं की कृपा सदा बनी रहती है।

संपादकीय

उत्तराखंड की स्थापना : एक संघर्ष की विजय

25वर्ष पूर्व यानी 9 नवंबर 2000 का वह दिन उत्तर भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया, जब उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों से अलग होकर भारत का 27वाँ राज्य उत्तरांचल अस्तित्व में आया। बाद में 2007 में इसका नाम बदलकर उत्तराखंड कर दिया गया। यह केवल एक भौगोलिक विभाजन नहीं था, बल्कि दशकों के जन-आंदोलन, बलिदानों और पहाड़ की मिट्टी में बसी अस्मिता की जीत थी। उत्तराखंड राज्य आंदोलन की जड़ें 19वीं सदी के अंत तक चली जाती हैं। ब्रिटिश काल में गढ़वाल और कुमाऊँ को अलग-अलग प्रशासनिक इकाइयों के रूप में देखा जाता था। आजादी के बाद जब 1950 में उत्तर प्रदेश बना, तो पहाड़ के लोग मैदान की राजनीति में हमेशा हाशिए पर रहे। दूर-दराज के गाँव, टूटी सड़कें, स्कूल-हस्पताल की कमी, बेरोजगारी और लगातार पलायन ये वो जख्म थे जिन्होंने 1994 में उत्तराखंड क्रांति दल के नेतृत्व में अलग राज्य की माँग को जन-आंदोलन बना दिया। मुजफ्फरनगर कांड (1 अक्टूबर 1994) और खटीमा-मसूरी गोलीकांड ने पूरे देश को हिला दिया। महिलाओं ने सबसे आगे मोर्चा संभाला। रामपुर तिराहा कांड (2 अक्टूबर 1994) में आंदोलनकारियों पर पुलिस की बर्बरता ने राज्य आंदोलन को अमर शहादत दे दी। इन बलिदानों ने केंद्र सरकार को झुकने पर मजबूर कर दिया। अंततः 9 नवंबर 2000 को भारत के नक्शे पर उत्तराखंड उभरा। नैन सिंह रावत

पहली अंतरिम सरकार के मुख्यमंत्री बने। राज्य बनने के बाद उम्मीदों का नया सवेरा उगा। देहरादून को अस्थायी राजधानी बनाया गया (अब गैरसैंण को ग्रीष्मकालीन राजधानी घोषित किया जा चुका है)। चारधाम यात्रा ने अर्थव्यवस्था को नई गति दी। पर्यटन, जलविद्युत और औषधीय पौधों ने रोजगार के नए द्वार खोले। 2001 में साक्षरता दर 72% थी जो 2023 तक बढ़कर 88% हो गई। आईटीबीपी, ओएनजीसी, बीएचईएल जैसे केंद्रीय संस्थानों ने युवाओं को रोजगार दिया। लेकिन 25 वर्ष बाद भी कई सवाल बरकरार हैं। पलायन थमा नहीं है। 2011 से 2021 के बीच 1.18 लाख लोग गाँव छोड़ चुके हैं। भूकंप संवेदनशील जोन-5 में होने के बावजूद अवैध निर्माण और अनियोजित पर्यटन हिमालय की नाजुक पारिस्थिति को खतरे में डाल रहे हैं। 2013 की केदारनाथ त्रासदी ने हमें चेताया था, फिर भी हमने सबक नहीं सीखा। जलवायु परिवर्तन से ग्लेशियर पिघल रहे हैं, नदियाँ सूख रही हैं। उत्तराखंड की स्थापना इसलिए नहीं हुई थी कि हम पहाड़ को शहर बना दें, बल्कि इसलिए हुई थी कि पहाड़ अपनी शर्तों पर जीये। हमें विकास नहीं चाहिए , संरक्षण नहीं बल्कि संतुलित विकास। गाँवों में रिवर्स पलायन के लिए होम-स्टे, ऑर्गेनिक खेती, सौर ऊर्जा और डिजिटल कनेक्टिविटी को बढ़ावा देना होगा। गैरसैंण को स्थायी राजधानी बनाकर हम पहाड़ की अस्मिता को मजबूत कर सकते हैं। 25वाँ स्थापना दिवस केवल जश्न का नहीं, आत्ममंथन का अवसर है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

आत्मनिर्भरता व आर्थिक सुधार

हाल ही में 7 नवंबर को प्रकाशित विश्व बैंक की वित्तीय क्षेत्र आकलन (एफएसए) रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत विकास की डगर पर आगे बढ़ रहा है। अब भारत को 2047 तक 30000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के लिए आर्थिक-वित्तीय क्षेत्र में सुधारों को और तेजी देने तथा निजी पूंजी जुटाने को बढ़ावा देने की जरूरत है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि 2017 में पिछले एफएसए के बाद से भारत की वित्तीय प्रणाली अधिक मजबूत, विविध और समावेशी हो गई है। रिपोर्ट में कहा गया कि वित्तीय क्षेत्र में सुधारों ने भारत को 2010 के दशक के विभिन्न संकटों और महामारी से उबरने में मदद की। रिपोर्ट में खाता उपयोग को और बढ़ावा देने और व्यक्तियों तथा एमएसएमई के लिए वित्तीय उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंच को आसान बनाने के सुझाव भी दिए गए हैं। गौरतलब है कि हाल ही में वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने एसबीआई कॉन्क्लेव 2025 को संबोधित करते हुए कहा कि वर्ष 2014 से स्वदेशी आत्मनिर्भरता और आर्थिक सुधार देश की अर्थव्यवस्था बड़ा सहारा बन गए हैं। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना एक ऐसे राष्ट्र की है, जो अपने लिए और दुनिया के लिए डिजाइन, उत्पादन और नवाचार करता है। साथ ही एक ऐसी अर्थव्यवस्था की है, जो आत्मविश्वास, उद्यमिता और संवेदनशीलता से प्रेरित हो। आत्मनिर्भर भारत के पांच प्रमुख आयाम हैं, जिसमें आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक आत्मनिर्भरता, तकनीकी आत्मनिर्भता, सामरिक आत्मनिर्भरता और ऊर्जा आत्मनिर्भरता शामिल हैं। सीतारमण ने कहा है कि आत्मनिर्भरता का अर्थ दुनिया से अलग-थलग रहना नहीं है, बल्कि यह एक मजबूत और सक्षम परस्पर निर्भरता है, जो घरेलू जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ वैश्विक वैल्यू चेन से जुड़ने की क्षमता रखती है। स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का अंतिम लक्ष्य 2047 तक आम आदमी के विकास के साथ विकसित भारत का निर्माण करना है। इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि पिछले एक दशक में भारत स्वदेशी और आत्मनिर्भरता के साथ अपने आर्थिक, वित्तीय और अन्य सुधारों के दम पर वैश्विक चुनौतियों के बीच मजबूती से आगे बढ़ा है। साथ ही भारत की घरेलू खपत भी भारत की आर्थिक शक्ति बन गई है। हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने अपनी नई रिपोर्ट में कहा है कि चालू वित्त वर्ष 2025-26 में वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं और व्यापार तनाव के बीच वैश्विक वृद्धि दर धीमी है, इसके बावजूद भारत मजबूत घरेलू खपत के दम पर 6.6 फीसदी विकास दर प्राप्त करते हुए दुनिया की उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओ में सबसे अधिक विकास दर की संभावनाएं रखता है। साथ ही भारत की विकास दर चीन से भी अधिक अनुमानित है। इसी तरह एसबीआई कैपिटल मार्केट्स की नई रिपोर्ट में कहा गया है कि इस समय वैश्विक व्यापार की चुनौतियों और ट्रंप के 50 फीसदी उच्च टैरिफ के चलते भारत की अर्थव्यवस्था भी प्रभावित हो रही है। ऐसे में चालू वित्त वर्ष की दूसरी छमाही यानी अक्टूबर से मार्च के बीच मजबूत घरेलू खपत और सरकार के पूंजीगत व्यय अर्थव्यवस्था को सहारा देते हुए दिखाई देंगे। बीते माह अक्टूबर 2025 में घरेलू खपत तेजी से बढ़ी है। निःसंदेह स्वदेशी और आत्मनिर्भरता से भारत की नई आर्थिक अनुकूलताओं और विकास की नई संभावनाओं का सुकूनदेह परिदृश्य उभरकर दिखाई दे रहा है। इस समय महंगाई घटने और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) सुधारों से भारत की घरेलू खपत तेजी से बढ़ते हुए दिखाई दे रही है। पिछले दिनों दिवाली के त्योहारी बाजार में बिक्री रिकॉर्ड ऊंचाई पर रही है। ई-कॉमर्स ने दमदार उछाल दर्ज की है। यह भी महत्वपूर्ण है कि फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के मुताबिक जहां वर्ष 2023 में दिवाली के त्योहारी बाजार में 3.75 लाख करोड़ रुपये और वर्ष 2024 में 4.25 लाख करोड़ रुपये की खरीददारी हुई थी।

दिगंबर अतिशय क्षेत्र पदमपुरा कमेटी ने अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज को श्रीफल भेंट किया

पदमपुरा आगमन हेतु किया ससम्मान आमंत्रण

तरुणसागरम तीर्थ, गाज़ियाबाद. शाबाश इंडिया

अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज इन दिनों तरुणसागरम तीर्थ पर वर्षायोग के लिए विराजमान हैं। इस अवसर पर दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा कमेटी की एक प्रतिनिधि टीम ने उनके दर्शन किए और पदमपुरा आगमन हेतु ससम्मान आमंत्रण प्रस्तुत किया। प्रतिनिधि मंडल में कमेटी अध्यक्ष सुधीर जैन, मंत्री हेमंत सोगानी, कोषाध्यक्ष राजकुमार कोठयारी, महेश काला, अनिल जैन (सेवानिवृत्त आईपीएस), जे. एम. जैन सहित अन्य गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। कमेटी द्वारा आचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर पदमपुरा आगमन का निवेदन किया गया। आचार्य श्री का मंगल प्रवचन – ''कर्म का फल अनिवार्य है।'' प्रवचन की श्रृंखला में उपस्थित भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज ने कहा जो कर्म हम करते हैं, उसका फल हमें स्वयं ही भोगना पड़ता है। ना किसी की दुआ व्यर्थ जाती है, और ना ही किसी की बद्दुआ खाली लौटती है। उन्होंने आगे कहा कि आज का युग असुरक्षा और भय का युग बन गया है कि आज हमारी बहन-बेटियों और महिलाओं का चरित्र असुरक्षित होता जा रहा है। कानून अपना काम करता है, सरकार अपना करती है – लेकिन अंततः कर्म अपना काम अवश्य करता है। हम दुनिया की नजरों से छिप सकते हैं, लेकिन खुद और खुदा की नजरों से नहीं बच सकते। आचार्य श्री ने कहा कि आज तकनीकी प्रगति के साथ चरित्र का ह्रास भी तेजी से हो रहा है। यदि तकनीकी विकास के नाम पर हम नैतिकता खो रहे हैं, तो यह कैसा विकास है? उन्होंने समाज में बढ़ते अनैतिक आचरण पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि दुःख इस बात का है कि छोटी-छोटी बालिकाओं का चरित्र भी अब सुरक्षित नहीं रहा और यह अपराध अक्सर परिवार या रिश्तों की आड़ में ही हो रहे हैं। आचार्य श्री ने स्पष्ट कहा कि कभी-कभी कुछ लोगों का उपचार बातों से नहीं, बल्कि दंड देकर करना पड़ता है। दंड कानून देता है, समझाइश परिवार करता है, और जब कर्म दंड देता है, तो कोई भी उसे रोक नहीं सकता। इसलिए जो भी कर्म करो, उसके परिणाम को भोगने के लिए सदैव तैयार रहो। जैसा कर्म करोगे, वैसा ही फल मिलेगा – यही ईश्वर का न्याय है।

श्रवण बेलगोला में आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज की प्रतिमा का हुआ अनावरण

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य के बेलगोला आगमन के 100 वर्ष पूर्ण होने पर उपराष्ट्रपति ने किया शताब्दी समारोह का शुभारंभ

श्रवण बेलगोला (कर्नाटक). शाबाश इंडिया

प्रसिद्ध दिगंबर जैन तीर्थ श्रवण बेलगोला में रविवार को चारित्र चक्रवर्ती आचार्य 108 श्री शांति सागर जी महाराज के इस पवित्र भूमि पर प्रथम आगमन के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भव्य शताब्दी समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर शांतिगिरी पर्वत पर आचार्य श्री की भव्य प्रतिमा का अनावरण भारत के उपराष्ट्रपति द्वारा परम पूज्य आचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ एवं आचार्य श्री सुविधि सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में संपन्न हुआ। समारोह में कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत, केंद्रीय मंत्री कुमारस्वामी, अनेक स्थानीय विधायक तथा हजारों श्रद्धालु जैन भक्त उपस्थित रहे। **आचार्य शांति सागर जी के प्रथम आगमन की स्मृति में:** भट्टारक चारुकीर्ति जी स्वामी महाराज ने बताया कि वर्ष 1925 में आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज के सानिध्य में यहां प्रथम महामस्तकाभिषेक महोत्सव संपन्न हुआ था। उस ऐतिहासिक अवसर के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में, परम पूज्य निर्यापक मुनि श्री विद्यासागर जी महाराज की भावना के अनुरूप, महाश्रमण वात्सल्य विहार समिति द्वारा आचार्य श्री शांति सागर जी की प्रतिमा की स्थापना कर मठ को समर्पित किया गया। प्रतिमा का अनावरण अत्यंत भव्यता और श्रद्धा के साथ संपन्न हुआ। **तीर्थ क्षेत्र की विशेषता:** श्रवण बेलगोला में चार प्रमुख पर्वत स्थित हैं – विंध्यगिरी, जहाँ गोमटेश्वर भगवान बाहुबली की भव्य प्रतिमा विराजमान है; चंद्रगिरी, चारुगिरी और शांतिगिरी, जहाँ आज आचार्य शांति सागर जी महाराज की प्रतिमा का अनावरण किया गया। इस आयोजन से पूरा क्षेत्र भक्तिमय वातावरण में गूंज उठा।

जयपुर से भी श्रद्धालु पहुंचे

इस ऐतिहासिक समारोह में जयपुर से भी श्रद्धालु उपस्थित रहे। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन समिति मीरा मार्ग के महामंत्री राजेंद्र कुमार सेठी, सुरेश जी सबलावत सहित कई गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। राजेंद्र कुमार सेठी ने बताया कि परम पूज्य आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज (दक्षिण) तथा परम पूज्य निर्यापक मुनि विद्यासागर जी महाराज ससंघ (27 पिच्छी) का चातुर्मास श्रवण बेलगोला में सानंद संपन्न हुआ। इस दौरान श्री आदिनाथ दिगंबर जैन समिति मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर के श्रावकगणों ने चार महीनों तक प्रतिदिन चौका लगाकर साधु-संघ की सेवा कर धर्मलाभ प्राप्त किया।

विहार सांगली की ओर

समारोह के पश्चात सूचना दी गई कि आचार्य संघ का विहार आगामी 11 नवंबर को सांगली की ओर होगा।

न्यू सरस्वती हाउस के तत्वावधान में जयपुर में हिंदी कार्यशाला का सफल आयोजन

शोभित जैन के संयोजन में हिंदी भाषा शिक्षण की नवीन तकनीकें और सुगम अधिगम विषय पर शिक्षकों ने सीखी नई शिक्षण विधियां

जयपुर. शाबाश इंडिया

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा. लि. के तत्वावधान में जयपुर स्थित होटल ग्रैंड उनियारा में हिंदी भाषा शिक्षण की नवीन तकनीकें और सुगम अधिगम विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था – हिंदी शिक्षकों को आधुनिक तकनीकी युग में शिक्षण के नए, प्रभावशाली और व्यावहारिक तरीकों से परिचित कराना। कार्यशाला का संचालन प्रसिद्ध शिक्षाविद्, कवि, साहित्यकार एवं वरिष्ठ पत्रकार डॉ. त्रिलोक नाथ पाण्डेय ने किया। डॉ. पाण्डेय वर्तमान में कलकत्ता बॉयज स्कूल, कोलकाता के हिंदी विभागाध्यक्ष एवं विषय समन्वयक हैं। वे सेंट जेवियर्स कॉलेज ऑफ एजुकेशन (कोलकाता) के अतिथि व्याख्याता तथा साठ्ये कॉलेज (स्वायत्त), मुंबई के हिंदी विभाग में आमंत्रित वक्ता भी हैं।

तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ा शिक्षण

कार्यशाला का शुभारंभ प्रातः 9:00 बजे पंजीकरण सत्र के साथ हुआ, जिसमें लगभग 100 हिंदी शिक्षकों ने भाग लिया। पहले सत्र में डॉ. पाण्डेय ने शिक्षण में तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभावी उपयोग पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने बताया कि आधुनिक युग में हिंदी शिक्षण को जीवंत, संवादात्मक और छात्र-केंद्रित बनाने में अकएक सशक्त उपकरण है। डॉ. पाण्डेय ने व्यावहारिक उदाहरणों और गतिविधियों के माध्यम से यह भी समझाया कि तकनीक किस प्रकार शिक्षण को अधिक रोचक, व्यक्तिगत और प्रभावी बना सकती है।

नवाचारी विधियाँ और सहभागिता आधारित अधिगम

दूसरे सत्र में प्रतिभागियों को हिंदी शिक्षण की नवाचारी विधियों से परिचित कराया गया। समूह गतिविधियों, विचार-विमर्श और प्रस्तुतियों के माध्यम से शिक्षकों ने नई शिक्षण तकनीकों को अपनाने का संकल्प लिया। सत्र में यह विशेष रूप से रेखांकित किया गया कि शिक्षक यदि सृजनशील और तकनीकी दृष्टि से सशक्त बनें, तो विद्यार्थियों का अधिगम अधिक गहन और आनंददायक बन सकता है।

फीडबैक और प्रशंसा

फीडबैक सत्र में सभी प्रतिभागियों ने कार्यशाला की सराहना करते हुए कहा कि यह आयोजन केवल ज्ञानवर्धक ही नहीं, बल्कि शिक्षण में नवाचार और तकनीकी समावेशन की दिशा में एक प्रेरक पहल है।

संस्था की पहल और भविष्य की दृष्टि

न्यू सरस्वती हाउस की ओर से रोहित जैन, प्रकाश दूसेजा और शोभित जैन ने बताया कि संस्था न केवल पाठ्यपुस्तक प्रकाशन में अग्रणी है, बल्कि नई शिक्षा नीति के अनुरूप शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए नियमित रूप से इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन करती है। इस अवसर पर संस्था की कुछ नई पुस्तकों का विमोचन भी किया गया।

कार्यशाला का समापन

कार्यशाला का समापन डॉ. त्रिलोक नाथ पाण्डेय के प्रेरक धन्यवाद ज्ञापन और समूह छायाचित्र के साथ हुआ। शिक्षकों ने भविष्य में भी इस प्रकार की और कार्यशालाएं आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की। यह आयोजन हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में तकनीकी और नवाचार आधारित अधिगम की दिशा में एक सार्थक और दूरदर्शी कदम सिद्ध हुआ।

मुनि श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज द्वारा रचित नीति रहस्य ग्रंथ पर आधारित प्रतियोगिता में नवकार ग्रुप के सदस्य बने विजेता

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप नवकार के अध्यक्ष मोहनलाल गंगवाल ने जानकारी दी कि मुनि श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज द्वारा रचित प्रेरणादायक ग्रंथ नीति रहस्य पर आधारित अखिल भारतीय प्रतियोगिता में नवकार ग्रुप के सदस्यों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विजेता बनने का गौरव प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में देशभर से जैन समाज के प्रतिभागियों ने भाग लिया और ग्रंथ का गहन अध्ययन कर अपने ज्ञान और समर्पण का परिचय दिया। प्रतियोगिता में मोहनलाल गंगवाल, प्रकाशचंद सेठी, ऊषा गंगवाल एवं डॉ. ओमप्रकाश को विजेता घोषित किया गया। विजेताओं को 20 ग्राम चांदी का सिक्का पुरस्कारस्वरूप प्रदान किया गया। ये पुरस्कार गुरुवर श्री आदित्य सागर जी महामुनि महाराज के दीक्षा दिवस पर, उनके पावन सानिध्य में आयोजित समारोह में वितरित किए गए। महाराज श्री ने विजेताओं को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि जिन ग्रंथों में नीति, ज्ञान और धर्म का संगम हो, उनका अध्ययन जीवन को उज्जवल दिशा

देता है। **नवकार ग्रुप की धार्मिक यात्रा और उत्सव:** इस अवसर पर नवकार ग्रुप के 45 सदस्यीय दल ने कुंडलपुर (बड़े बाबा) एवं जबलपुर की धार्मिक यात्रा की। यात्रा के दौरान प्रदीप कुमार अजमेरा का जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभी सदस्यों ने हाऊजी खेल, भजन संध्या और फिल्मी गीतों के माध्यम से मनोरंजन का भरपूर आनंद लिया। ग्रुप सदस्य ज्ञानचंद गंगवाल ने भजन और गीतों की उत्कृष्ट प्रस्तुतियाँ दीं, जिनकी

सभी ने सराहना की। यात्रा के समापन पर अध्यक्ष मोहनलाल गंगवाल ने सभी सदस्यों के सहयोग और सहभागिता के लिए आभार व्यक्त किया एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

अजमेर संभाग ने श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर की 90 बालिकाओं को प्रदान की गर्म वस्त्र सेवा

सांगानेर (जयपुर). शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन महासमिति अजमेर संभाग एवं श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवं युवा महिला संभाग अजमेर के तत्वावधान में, जैन संत मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महामुनिराज के आशीर्वाद से संचालित श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान बालिका छात्रावास, सांगानेर की 90 बालिकाओं को हुडी (गर्म वस्त्र) भेंट की गई। यह सेवा कार्यक्रम संस्थान की अधिष्ठात्री श्रीमती शीला जी डोडिया के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ।

सेवा का सतत संकल्प

समिति अध्यक्ष अतुल पाटनी ने बताया कि संरक्षक राकेश पालीवाल एवं राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी के सहयोग से प्रत्येक वर्ष संस्थान में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं को गर्म वस्त्र प्रदान करने की सेवा निरंतर जारी है। उन्होंने कहा कि यह पहल न केवल सेवा भावना का प्रतीक है, बल्कि समाज में बालिकाओं के प्रति संवेदनशीलता और आत्मीयता का संदेश भी देती है। इससे पूर्व समिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी, संरक्षक राकेश पालीवाल और अध्यक्ष अतुल पाटनी के संस्थान आगमन पर राजस्थान अंचल अध्यक्ष श्रीमती शालिनी बाकलीवाल एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती विद्युत लुहाड़िया ने उनका तिलक लगाकर, माल्यार्पण कर स्वागत किया। संस्थान की अधिष्ठात्री श्रीमती शीला डोडिया ने संस्थान की गतिविधियों, उपलब्धियों और बालिकाओं के शैक्षणिक कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संस्थान में रहकर बालिकाएँ न केवल शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, बल्कि जैन संस्कृति, अनुशासन और नैतिक मूल्यों को भी आत्मसात कर रही हैं। इस अवसर पर समिति सदस्य आशा पाटनी, सुरेश पाटनी, ज्ञानु जैन सहित अन्य पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन बालिकाओं द्वारा गुरु वंदना एवं मंगलाचरण के साथ हुआ।

निवाई से सैकड़ों श्रद्धालुओं का जत्था जन्म कल्याणक महोत्सव में पहुंचा, की पुष्पवर्षा

आचार्य वर्धमान सागर महाराज ने कहा — जन्म कल्याणक आत्मकल्याण और संयमित जीवन का संदेश देता है...

निवाई. शाबाश इंडिया

राष्ट्रीय संत आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में आयोजित जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक महोत्सव बड़े ही धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर निवाई से सैकड़ों श्रद्धालुओं का विशाल जत्था गाजे-बाजे के साथ शोभायात्रा में शामिल हुआ। श्रद्धालुओं ने भक्ति गीतों और जयकारों के साथ महोत्सव स्थल पर पहुँचकर भगवान के जन्मोत्सव की खुशियाँ मनाई।

पुष्पवर्षा और भक्ति का उत्सव

भगवान पार्श्वनाथ के जन्मोत्सव की शोभायात्रा के दौरान दिनेश गट्टी और विमल पाटनी के नेतृत्व में श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर भक्ति भाव से मंगल वातावरण निर्मित किया। महिलाओं ने पारंपरिक बधाई गीतों की प्रस्तुति दी, वहीं पुरुषों ने भजनों और कीर्तन से माहौल को भक्तिमय बना दिया। जैन समाज निवाई के प्रवक्ता सुनील भाणजा और विमल जौंला ने बताया कि महोत्सव के दौरान श्रद्धालुओं में गहरी आस्था और उल्लास देखने को मिला। **आचार्य श्री का मंगल प्रवचन:** इस अवसर पर आचार्य वर्धमान सागर महाराज ने अपने प्रवचन में कहा – भगवान का जन्म कल्याणक केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मकल्याण और संयमित जीवन जीने का संदेश है। धर्म ही जीवन को सच्ची दिशा देता है और आत्मा के उत्थान का मार्ग दिखाता है। **श्रद्धालुओं की सहभागिता:** महोत्सव में निवाई जैन समाज के सैकड़ों श्रद्धालु शामिल हुए, जिनमें प्रमुख रूप से – श्रेष्ठी महावीर प्रसाद पराणा, विमल सोगानी, प्रेमचंद सोगानी, राकेश संधी, हुकमचंद जैन, संजय सोगानी, महेन्द्र चंवरिया, राजेन्द्र गट्टी, रमेश जैन, प्रदीप गट्टी, पवन गट्टी, मंजू जैन, हेमा जैन, स्नेहा जैन, शुभि जैन, आशी जैन एवं रेखा जैन शामिल रहे। सभी श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज के चरणों में श्रीफल चढ़ाकर आशीर्वाद प्राप्त किया और धर्ममय वातावरण में भावविभोर हो गए।

25वी वैवाहिक वर्षगांठ

आदिनाथ मित्र मण्डल के उपाध्यक्ष
प्रमुख समाज सेवी
श्री साकेत जैन एवं श्रीमती सोनिया जैन
को 25वीं वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाये
शुभेच्छु
राकेश गोदिका, संरक्षक
सुनील जैन, अध्यक्ष
राजेंद्र बाकलीवाल, मंत्री
एवं समस्त आदिनाथ मित्र मण्डल परिवार

महावीर इंटरनेशनल एपेक्स द्वारा आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला 'सेवा से संतुष्टि' संपन्न

गवर्निंग काउंसिल सदस्यों ने ली शपथ

सेवा भावना को और सशक्त बनाने का लिया संकल्प

कुंभलगढ़ / बांसवाड़ा। महावीर इंटरनेशनल एपेक्स के तत्वावधान में कुंभलगढ़ में दो दिवसीय गवर्निंग काउंसिल मीटिंग एवं प्रशिक्षण कार्यशाला "सेवा से संतुष्टि" थीम पर संपन्न हुई। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना सभा — "भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो" से हुई।कार्यशाला का शुभारंभ अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष वीर अनिल जैन, महासचिव वीर सोहनलाल वैद्य, कोषाध्यक्ष वीर सुधीर जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष वीर महेंद्र जैन तथा रीजन-4 अध्यक्ष वीर गौतम राठौड़ ने दीप प्रज्वलन के साथ किया।कार्यशाला में संगठन के उद्देश्य, सेवा परियोजनाओं के प्रभावी संचालन, महिला सशक्तिकरण और चेयरपर्सन-सचिवों की भूमिका पर विस्तृत चर्चा हुई। संगठन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए उपस्थित सदस्यों ने एकजुट होकर संकल्प लिया।इस दो दिवसीय बैठक में भारत के सभी 11 रीजन के अध्यक्ष, सचिव एवं 51 गवर्निंग काउंसिल सदस्यों ने भाग लिया।कार्यक्रम के दौरान अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष वीर अनिल जैन ने सभी पदाधिकारियों को शपथ ग्रहण करवाई। शाम को रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम में सभी वीर-वीराओं को दुपट्टा ओढ़ाकर एवं भक्तामर स्तोत्र की पुस्तिका भेंट कर सम्मानित किया गया।दूसरे दिन संगठन की 16 माह की कार्य योजना पर चर्चा की गई और "सबको प्यार, सबकी सेवा" के आदर्श वाक्य के अनुरूप देशभर के केंद्रों को सेवा कार्यों में सक्रिय रहने के निर्देश दिए गए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शाखाओं के विस्तार पर भी विचार किया गया।कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सदस्यों ने कुंभलगढ़ किला एवं अन्य दर्शनीय स्थलों का भ्रमण कर ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी प्राप्त की।इस अवसर पर वीर सुरेश चंद्र गांधी, अजीत कोटिया और हर्षवर्धन जैन सहित कई सदस्यों ने गवर्निंग काउंसिल सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण की।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत तप कल्याणक महोत्सव मनाया गया"कोई भी कार्य करने से पहले अभ्यास आवश्यक होता है" आचार्य श्री विनिश्चय सागर महाराज

रामगंजमंडी। परम पूज्य आचार्य श्री 108 विनिश्चय सागर महाराज के सानिध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के तृतीय दिवस पर तप कल्याणक महोत्सव का आयोजन बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ संपन्न हुआ।कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीजी के अभिषेक और शांतिधारा से हुआ, जिसके पश्चात पूजन, जन्म कल्याणक एवं हवन आदि विधिवत संपन्न किए गए। इसके उपरांत आचार्य श्री विनिश्चय सागर महाराज ने अपने मंगल प्रवचन में अभ्यास के महत्व पर प्रकाश डाला।"कार्य से अधिक अभ्यास में परिश्रम होता है" — आचार्य श्रीआचार्य श्री ने कहा —"कोई भी कार्य करने से पहले अभ्यास आवश्यक होता है। व्यक्ति कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, यदि अभ्यास नहीं करता, तो असफलता निश्चित है। असफल होने के बाद मनुष्य पछताता है, इसलिए अभ्यास सफलता की कुंजी है।"उन्होंने आगे कहा कि —"कार्य से ज्यादा परिश्रम अभ्यास में होता है। यदि अभ्यास सही हो, तो कार्य में कभी कठिनाई नहीं आती।""दिगंबर मुद्रा का अभ्यास केशलोच से शुरू होता है"आचार्य श्री ने समझाया कि दिगंबर मुद्रा का अभ्यास केशलोच से प्रारंभ होता है।उन्होंने कहा —"यह शरीर अस्थायी व्यवस्था है। दिगंबर साधु अपने अभ्यास से स्वयं को वीतरागता की दिशा में अग्रसर करते हैं। मनुष्य में विशेषता है कि वह जैसा चाहे, वैसा परिवर्तन कर सकता है — बुराई को अच्छाई में और अच्छाई को बुराई में भी बदल सकता है, यदि अभ्यास सही दिशा में हो।""आध्यात्मिक अभ्यास से ही आत्मकल्याण संभव है"गुरुदेव ने कहा —"हम लौकिक कार्यों का अभ्यास तो करते हैं, परंतु आध्यात्मिक अभ्यास से दूर हैं। पूजा, पाठ और अनुष्ठान से धर्म और अध्यात्म का विकास होता है। हमें वस्तु स्वरूप को जानना और उसमें आनंद लेना चाहिए, तभी सच्चा आध्यात्मिक उत्थान संभव है।"उन्होंने कहा कि —"धर्म में जिसकी जितनी आस्था और शक्ति है, वह उतना ही पुण्य अर्जित कर सकता है। संस्कार और संस्कृति उत्तम होंगे तो जीवन का हर पड़ाव श्रेष्ठ होगा। थोड़ा-सा परिवर्तन लाकर यदि हम अध्यात्म से जुड़ जाएँ, तो निश्चित ही स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त होगा।" भावनात्मक दृश्य और दीक्षा विधि का आयोजनब्रह्मचारी नमन भैया के निर्देशन में दोपहर में विनायक यंत्र पूजन और राजकुमार आदिकुमार का विवाह उत्सव आयोजित हुआ। इस अवसर पर भगवान के माता-पिता की भूमिका सुधा एवं जयकुमार डूंगरवाल ने निभाई, जबकि सौधर्म इंद्र-इंद्राणी के रूप में मयंक एवं विजया सांवला, और कुबेर इंद्र के रूप में मनीष सिंघल विराजमान हुए। 32000 मुकुटबद्ध राजाओं द्वारा भेंट समर्पण, राज्याभिषेक, भरत-बाहुबली संवाद तथा भगवान आदिनाथ द्वारा आसि-मसी-कृषि का संदेश प्रदान करने की झांकी प्रस्तुत की गई। राजसभा में नीलांजना नृत्य का भावनात्मक दृश्य प्रस्तुत हुआ, जिसमें राजकुमार आदिनाथ को वैराग्य की प्राप्ति होती है और वे दीक्षा लेने के लिए अग्रसर होते हैं।आचार्य श्री के सानिध्य में दीक्षाभिषेक एवं दीक्षा विधि का आयोजन हुआ और प्रतिमाओं पर दीक्षा संस्कार संपन्न किए गए। पूर्व दिवस की झलकएक दिन पूर्व, जन्म कल्याणक की बेला में तीर्थंकर बालक का पालना झुलाया गया तथा बाल क्रीड़ा के दृश्य प्रस्तुत किए गए।

रिपोर्ट : अभिषेक जैन लुहाड़िया, रामगंजमंडी 9929747312

आचार्य शांतिसागर महाराज की शिक्षाएं आज भी शांति और सद्भाव के लिए प्रासंगिक: उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन

श्रवणबेलगोला शताब्दी समारोह में उपराष्ट्रपति ने किया आचार्य शांतिसागर महाराज की प्रतिमा का अनावरण

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक). शाबाश इंडिया

भारत के उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने रविवार, 9 नवंबर 2025 को कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में आचार्य श्री 108 शांतिसागर महाराज जी की यात्रा के शताब्दी समारोह में भाग लिया और आचार्य जी की प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर भट्टारक अभिनव चारुकीर्ति स्वामीजी ने उपराष्ट्रपति महोदय का स्वागत करते हुए उन्हें स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। उपराष्ट्रपति ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य श्री शांतिसागर महाराज जी ने जैन धर्म के अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांतवाद जैसे सिद्धांतों को जीवन में मूर्त रूप दिया। उनका जीवन आज भी आंतरिक शांति, संयम और सामाजिक सद्भाव के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने कहा कि भौतिकता के इस युग में सच्ची स्वतंत्रता संपत्ति अर्जन में नहीं, बल्कि आत्मसंयम और करुणा में निहित है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि यह शताब्दी समारोह न केवल एक महान संत के जीवन का उत्सव है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए आध्यात्मिक ज्योति को पुनः प्रज्वलित करने का माध्यम भी है। उन्होंने कहा कि यह प्रतिमा सादगी, पवित्रता और करुणा की शक्ति का प्रतीक बनकर आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगी। उन्होंने श्रवणबेलगोला की 2000 वर्ष पुरानी जैन परंपरा और भगवान बाहुबली की 57 फुट ऊंची प्रतिमा को आध्यात्मिक भक्ति और कलात्मक उत्कृष्टता का शाश्वत प्रतीक बताया। उपराष्ट्रपति ने बताया कि सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने यहीं आचार्य भद्रबाहु के सान्निध्य में संन्यास ग्रहण किया था, जो सांसारिक उपलब्धियों से आध्यात्मिक ज्ञान की ओर यात्रा का प्रतीक है। उन्होंने भारत सरकार द्वारा प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने और जैन पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण हेतु ज्ञानभारतम मिशन शुरू करने की सराहना की। इस अवसर पर कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत, केंद्रीय मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी, राजस्व मंत्री कृष्ण बायरे गौड़ा, हासन सांसद श्रेयस एम. पटेल सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

रिपोर्ट : डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

सागर में होगा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव

16 से 21 नवंबर तक चलेगा भव्य आयोजन

अध्यात्मयोगी चर्या शिरोमणि आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महामुनिराज ससंघ के सान्निध्य में होगा आयोजन

सागर (मध्यप्रदेश). शाबाश इंडिया

दिनांक 16 से 21 नवंबर 2025 तक श्री बाबूलाल ताराबाई जैन धर्मार्थ ट्रस्ट बी.टी.आई.आर.टी. परिसर, सिरोंजा, सागर में अध्यात्मयोगी चर्या शिरोमणि आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महामुनिराज ससंघ के सान्निध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव का भव्य आयोजन होने जा रहा है। इस महोत्सव का संचालन प्रतिष्ठाचार्य ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत भैया के निर्देशन में तथा पंडित सनत कुमार जैन एवं पंडित विनोद कुमार जैन के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगा। महोत्सव के आयोजन का पुण्यार्जन सिंघई सुरेंद्र कुमार - संतोष कुमार जैन घड़ी, शैलेंद्र सिंघई, डॉ. सत्येंद्र जैन, संदीप जैन एवं बी.टी.आई.आर.टी. परिवार सागर को प्राप्त हुआ है। आयोजन की तैयारियाँ युद्धस्तर पर की जा रही हैं, जिससे यह आयोजन अत्यंत भव्य और ऐतिहासिक बन सके।

आयोजन की तैयारियां चरम पर

महोत्सव के प्रचार संयोजक डॉ. सुनील जैन संचय ने जानकारी देते हुए बताया कि पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारियों के संबंध में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें जनप्रतिनिधियों के साथ-साथ प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित रहे। बैठक में उपस्थित प्रशासनिक अधिकारियों को महोत्सव के आयोजक संतोष जैन घड़ी एवं स्वागत अध्यक्ष विधायक शैलेन्द्र जैन (सागर) ने कार्यक्रम की रूपरेखा और आयोजन की व्यवस्थाओं से अवगत कराया। इस अवसर पर आयोजन स्थल का निरीक्षण भी किया गया।

श्रद्धालुओं के लिए ऑनलाइन पंजीकरण सुविधा

डॉ. संचय ने बताया कि आयोजन की तैयारियाँ निरंतर प्रगति पर हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण प्रणाली प्रारंभ की गई है, ताकि किसी भी भक्त को कोई असुविधा न हो और सभी श्रद्धालु सहजता से महोत्सव का पुण्य लाभ प्राप्त कर सकें।

डॉ. सुनील जैन संचय
प्रचार संयोजक, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव, सागर

आत्मा की चोट जिसे केवल परमात्मा ही जानते हैं...

नितिन जैन, संयोजक – जैन तीर्थ श्री पार्श्व पद्मावती धाम, पलवल (हरियाणा)
जिलाध्यक्ष – अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन, पलवल

जीवन में हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में दर्द से गुजरता है। कोई शब्दों से घायल होता है, कोई व्यवहार से, कोई विश्वास के टूटने से। लेकिन सबसे गहरी चोट वह होती है जो आत्मा को लगती है – वह जो दिखाई नहीं देती, जिसे कोई महसूस नहीं कर सकता, पर जो भीतर तक झकझोर देती है। आत्मा की यह चोट तब लगती है जब हमारा भरोसा टूटता है, जब हम किसी के लिए सब कुछ करते हैं और बदले में अस्वीकार या उपेक्षा पाते हैं। यह चोट न खून निकालती है, न निशान छोड़ती है, लेकिन भीतर का संतुलन बिगाड़ देती है। लोग समझते हैं कि दुख केवल वही है जो रोकर बताया जाए, पर जो सच्चे अर्थों में पीड़ा को समझते हैं, वे जानते हैं – सबसे गहरी पीड़ा वह होती है जो कहने योग्य ही नहीं रहती। आत्मा की चोट का उपचार किसी मनुष्य के पास नहीं होता, क्योंकि यह शरीर नहीं, चेतना को छूती है। यही कारण है कि इसे केवल परमात्मा ही जानते हैं – वही इसके साक्षी हैं। परमात्मा ही वह अदृश्य शक्ति हैं जो हमारे मौन को समझते हैं। जब कोई हमें गलत समझ लेता है, जब सच्चाई के बावजूद हम पर आरोप लगते हैं, जब हमारे प्रेम को लोग स्वार्थ समझ लेते हैं – तब आत्मा रोती है। और उस समय यदि कोई हमारे पास होता भी है, तब भी भीतर से लगता है कि यह दर्द केवल हमें और हमारे परमात्मा को पता है। वही भीतर बैठा है जो जानता है कि किस क्षण किस भावना ने हमारी आत्मा को झकझोरा है। कभी-कभी यह चोट हमें और गहराई देती है। यह सिखाती है कि सच्ची शक्ति बाहर नहीं, भीतर होती है। जब हम टूटते हैं और फिर उठ खड़े होते हैं, तब आत्मा की मजबूती बढ़ती है। परमात्मा हमें हर बार भीतर से पुनः खड़ा करते हैं ताकि हम और दयालु, और संवेदनशील बन सकें। जो इस सत्य को समझ लेता है, वह किसी से शिकायत नहीं करता, क्योंकि वह जान जाता है कि जो कुछ हुआ, उसमें भी परमात्मा की कोई शिक्षा छिपी थी। इसलिए जब आत्मा को चोट लगे, तो उसे दुर्भाग्य न समझें। वह आपके भीतर के विकास की प्रक्रिया है। वह बताती है कि अब आपको और ऊँचा उठना है – अब आपको बाहरी दुनिया की नहीं, अपने अंतर के सत्य की ओर देखना है। आत्मा की हर चोट एक नया मार्ग खोलती है – जहाँ अहंकार टूटता है, पर आत्मा जागती है और इस जागरण का साक्षी कोई नहीं होता, सिवाय उस परमात्मा के, जो हमारे हर श्वास के साथ हमारे भीतर विद्यमान है।

आईआईटी मंडी के 13वें दीक्षांत समारोह में 602 छात्र होंगे सम्मानित

292 स्नातक, 241 स्नातकोत्तर और 69 पीएच.डी. शोधार्थियों को मिलेगी उपाधि

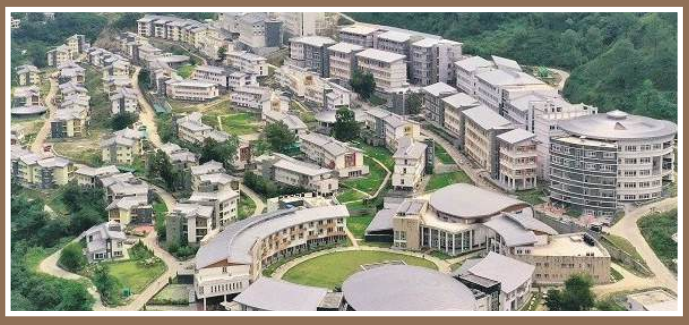

मंडी. शाबाश इंडिया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी मंडी) अपना 13वाँ दीक्षांत समारोह आगामी 13 नवंबर को आयोजित करेगा। इस अवसर पर कुल 602 विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की जाएँगी, जिनमें 292 स्नातक, 241 स्नातकोत्तर तथा 69 पीएच.डी. शोधार्थी शामिल हैं। आईआईटी मंडी के निदेशक प्रो. लक्ष्मिधर बेहरा ने कहा, 13वाँ दीक्षांत समारोह हम सभी के लिए गर्व का क्षण है। यह हमारे विद्यार्थियों की समर्पण, दृढ़ता और बौद्धिक विकास का उत्सव है। प्रत्येक स्नातक छात्र आईआईटी मंडी की नवाचार और उत्कृष्टता की भावना का प्रतीक है। हमें विश्वास है कि हमारे विद्यार्थी राष्ट्र और विश्व स्तर पर सार्थक योगदान देंगे। इस वर्ष के दीक्षांत समारोह में प्रो. शेखर सी. मांडे, पूर्व महानिदेशक, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। कार्यक्रम में डॉ. जगन्नाथ नायक, निदेशक, सेंटर फॉर हाई एनर्जी सिस्टम्स एंड साइंसेज (चेस), डीआरडीओ, तथा प्रो. बुदराजू श्रीनिवास मूर्ति, निदेशक, आईआईटी हैदराबाद, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। समारोह की अध्यक्षता लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) कंवल जीत सिंह ढिल्लों, अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स, आईआईटी मंडी द्वारा की जाएगी। संस्थान प्रशासन के अनुसार, समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को विशेष सम्मान और पुरस्कार भी प्रदान किए जाएँगे।

वकीलों की क्रिकेट प्रतियोगिता में सांगानेर रॉयल पैंथर विजयी

जस्टिस अनिल उपमन ने किया पुरस्कार वितरण

सांगानेर। सांगानेर बार एसोसिएशन की ओर से उदयवीर सिंह यादव स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता, दीपावली स्नेह मिलन एवं अन्नकूट महोत्सव का आयोजन सांगानेर न्यायालय परिसर में भव्य रूप से किया गया। प्रतियोगिता के व्यवस्थापक जितेन्द्र सिंह सैनी ने बताया कि दो दिवसीय इस आयोजन में वकीलों की नौ टीमों ने भाग लिया, जिनमें पहली बार महिला अधिवक्ताओं की टीम भी शामिल हुई। कुल आठ मैचों के बाद फाइनल मुकाबला सांगानेर यंगस्टर्स और सांगानेर रॉयल पैंथर के बीच खेला गया, जिसमें सांगानेर रॉयल पैंथर विजयी रही। विजेता टीम को उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जस्टिस अनिल उपमन ने विजेता कप प्रदान किया। विजेता टीम के कप्तान नेमीचंद सामरिया, उपकप्तान सूर्यराज भाटी, कोच विनोद कुमार दोवट्या, मैनेजर महावीर सुरेन्द्र जैन सहित संपूर्ण टीम को ट्रॉफी व प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। बार एसोसिएशन अध्यक्ष तीर्थ नारायण शर्मा ने बताया कि सांगानेर यंगस्टर्स की टीम उपविजेता रही। प्रतियोगिता के समापन अवसर पर सभी टीमों के खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के साथ अन्नकूट प्रसादी का आयोजन भी किया गया, जिसमें सभी अधिवक्ताओं ने स्नेहपूर्वक भाग लिया। व्यवस्थापक संजय शर्मा ने बताया कि स्नेह मिलन के दौरान अधिवक्ताओं ने एक-दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएँ दीं और प्रसादी ग्रहण की। इस अवसर पर सभी सहयोगकताओं का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जस्टिस अनिल उपमन, एडीजे राजपाल सिंह, पुरवा चतुर्वेदी, न्यायिक अधिकारी नवनीत कुमार, श्रीमती ममता गुप्ता, श्रीमती अनिता मीणा, छवि सिंघल, सौम्य कुमार सिंह, बार अध्यक्ष तीर्थ नारायण शर्मा, महासचिव ओमप्रकाश चौधरी सहित अनेक अधिवक्ता एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

पीएम श्री केवी नसीराबाद में केंद्रीय विद्यालय संगठन की समझ विषय पर सारगर्भित सेमिनार

नसीराबाद (रोहित जैन)

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, नसीराबाद में सोमवार को केंद्रीय विद्यालय संगठन की संरचना एवं कार्यप्रणाली विषय पर एक सार्थक और ज्ञानवर्धक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का संचालन विद्यालय के वरिष्ठ एवं अनुभवी शिक्षकों – रंजीत कुमार कनौजिया (पीजीटी, इतिहास) तथा सुल्तान राम यादव (टीजीटी, अंग्रेजी) – के निर्देशन में संपन्न हुआ। इस कार्यशाला का उद्देश्य नव नियुक्त एवं अनुबंधित शिक्षकों को केंद्रीय विद्यालय संगठन की संरचना, उद्देश्यों, प्रशासनिक व्यवस्था एवं कार्यप्रणाली की विस्तृत जानकारी प्रदान करना था। वक्ताओं ने अपने संबोधन में बताया कि केंद्रीय विद्यालय संगठन न केवल विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है, बल्कि उनमें राष्ट्रीय एकता, अनुशासन, समरसता और समग्र विकास के मूल्य भी विकसित करता है। कार्यशाला के दौरान शिक्षकों को केवीएस की प्रशासनिक संरचना, क्षेत्रीय कार्यालयों की भूमिका, मुख्यालय की कार्यप्रणाली तथा विद्यालय स्तर पर लागू शैक्षणिक एवं प्रशासनिक नीतियों के बारे में विस्तारपूर्वक अवगत कराया गया। कार्यशाला के इंटरएक्टिव सत्र में उपस्थित शिक्षकों ने अपने प्रश्न रखे, जिनका उत्तर वक्ताओं ने अत्यंत स्पष्टता और उदाहरणों के साथ दिया। लगभग तीन घंटे तक चली इस कार्यशाला में विद्यालय के सभी संविदा शिक्षक एवं नियमित शिक्षकगण उत्साहपूर्वक सहभागी बने।

पंचकल्याणक महोत्सव में धूमधाम से मनाया गया गर्भ कल्याणक पूर्वार्ध

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्रुतसंवेगी मुनि श्री आदित्य सागर जी महाराज ससंघ के परम सान्निध्य में श्री मज्जिनेन्द्र नेमिनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 9 से 15 नवंबर तक मुंशीमहल गार्डन, कमल एंड कंपनी, टोंक रोड पर भव्य रूप से किया जा रहा है। आज महोत्सव के अंतर्गत गर्भ कल्याणक पूर्वार्ध बड़े ही श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कीर्ति नगर जैन मंदिर से महोत्सव पांडाल तक निकाली गई विशाल घट यात्रा से हुआ। इस शोभायात्रा में लगभग 500 से अधिक महिलाओं ने पारंपरिक परिधानों में भाग लिया। भगवान आदिनाथ और महावीर स्वामी को रजत रथों में विराजमान कर श्रद्धापूर्वक पंडाल तक लाया गया। यात्रा में इंद्र-इन्द्राणियों ने प्रभु भक्ति के गीत गाए, वहीं जिन प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा होनी है, उन्हें मूर्ति पुण्यार्जक परिवारों ने सिर पर विराजित कर यात्रा में सम्मिलित किया। पंडाल स्थल पर ध्वजारोहण और मंडप उद्घाटन का आयोजन किया गया, जिसके ध्वजारोहणकर्ता अनिल पहाड़िया एवं परिवारजन रहे। मंदिर अध्यक्ष प्रेम जैन और महामंत्री जगदीश जैन ने बताया कि आज मुनि संघ के पादप्रक्षालन का सौभाग्य झोटवाड़ा निवासी तरुण जैन और शौर्य जैन को प्राप्त हुआ। अपने मंगल प्रवचन में मुनि श्री आदित्य सागर जी महाराज ने कहा – यदि आप दूसरों के दुख में सुखी हो रहे हैं, तो भविष्य में आपको दुख अवश्य मिलेगा। सदैव भगवान से यह प्रार्थना करें कि ह्यहे प्रभु, मुझे और मेरे पड़ोसी – दोनों को सुखी रखना। स्वच्छ प्रतिस्पर्धा रखें, किसी की लाइन छोटी न करें – अपनी लाइन बड़ी करें। प्रचार मंत्री आशीष बैद ने बताया कि पाषाण से भगवान बनने के इस महोत्सव के अंतर्गत आज यागमंडल विधान संपन्न हुआ।

ग्राम पंचायत मिठनपुरा में सरपंच अजय सोलंकी की अनोखी पहल

हर बेटी के जन्म पर मिलेगा ₹1100 प्रोत्साहन व लगाए जाएंगे 11 पौधे

ऐलनाबाद। ग्राम पंचायत मिठनपुरा के सरपंच अजय सोलंकी ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान को नई दिशा देते हुए एक सराहनीय और प्रेरणादायक पहल की है। अब गांव में जन्म लेने वाली हर बेटी के नाम पर ₹1100 की प्रोत्साहन राशि दी जाएगी, साथ ही उसके नाम से 11 पौधे लगाए जाएंगे।सरपंच अजय सोलंकी ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य लिंग समानता को बढ़ावा देना और पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा,बेटियां हमारे समाज की धरोहर हैं। यदि हम उनके जन्म पर खुशियां मनाएंगे और उनके नाम से पेड़ लगाएंगे, तो यह समाज और प्रकृति — दोनों के लिए एक शुभ संदेश होगा।इस निर्णय का ग्रामीणों ने जोश और उत्साह के साथ स्वागत किया। गांववासियों ने सरपंच की इस सोच को बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान की सच्ची मिसाल बताया। पंचायत की योजना है कि लगाए गए पौधों की देखरेख संबंधित परिवार और पंचायत मिलकर करेंगे, ताकि यह मुहिम लंबे समय तक फलती-फूलती रहे।यह अनोखी पहल न केवल पर्यावरण को हरियाली का उपहार देगी, बल्कि समाज में बेटियों के सम्मान और महत्व का संदेश भी फैलाएगी।

किसी को बाध्य नहीं किया जा सकता: मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी में विकास योजनाओं पर दी दिशा, विधायक और डिप्टी कलेक्टर ने किया महादानम कृति का विमोचन

अशोकनगर. शाबाश इंडिया

परम पूज्य मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने कहा कि भारत में रहने वालों को मातृभाषा हिंदी बोलना चाहिए, किंतु किसी को इसके लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। लोकसभा में हिंदी को अनिवार्य करने वाले विधेयक का विरोध इसी कारण हुआ कि किसी विषय पर सर्वसम्मति बनना कठिन होता है। मुनि श्री ने कहा आप किसी को मिथ्या नहीं कह सकते, किसी को पापी नहीं कह सकते। 16वीं सदी में इसी सत्य के कारण टोडरमल जी को भी कष्ट सहना पड़ा था। जब मैंने मांस निर्यात बंद करने के आंदोलन की बात एक बड़े नेता से की, तो उन्होंने कहा – यदि यह लागू हो गया, तो देश दो भागों में बँट जाएगा। इसलिए किसी को हम बाध्य नहीं कर सकते। उन्होंने आगे कहा कि देश में मांस की खपत इतनी अधिक है कि उत्पादन ही पर्याप्त नहीं है, इसलिए इसका समाधान संवेदनशीलता और आत्मसंयम में है, न कि टकराव में।

दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी के विकास में सभी का सहयोग आवश्यक: विजय धुर्रा

तीर्थ क्षेत्र कमेटी के प्रचार मंत्री विजय धुर्रा ने कहा कि जबसे इस तीर्थ को दर्शनोदय तीर्थ का नाम मिला है, तबसे तीर्थ क्षेत्र के विकास को नई दिशा मिली है। आज सैकड़ों यात्रियों के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि यह सब पूज्य मुनि श्री के मार्गदर्शन से संभव हुआ है।

अर्धमागधी भाषा की कृति महादानम का हुआ विमोचन

शाम के सत्र में पूज्य मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में विधायक जगन्नाथ सिंह रघुवंशी एवं शिवपुरी के डिप्टी कलेक्टर एम.एल. अमोल द्वारा अर्धमागधी भाषा में रचित कृति महादानम का विमोचन किया गया। मुनि श्री ने कहा कि अर्धमागधी और ब्राह्मी जैसी भाषाएं दो हजार वर्ष पूर्व अत्यंत प्रचलित थीं, लेकिन समय के साथ लुप्त हो गईं। अब इन पर पुनः कार्य हो रहा है। किसी भी भाषा पर शोध किया जाना हमारे ज्ञान के विस्तार का माध्यम है।

राजनीति में शुचिता का अभाव चिंताजनक: विधायक रघुवंशी

विधायक जगन्नाथ सिंह रघुवंशी ने कहा कि आज राजनीति से शुचिता (पवित्रता) गायब हो रही है। एक बार जनप्रतिनिधि बनने के बाद अधिकांश नेता जनता को भूल जाते हैं और अपने हित में लग जाते हैं। यह स्थिति सुधार की मांग करती है। अपने प्रवचन में मुनि श्री ने कहा हम किसी को धर्म के नाम पर कुछ नहीं कह सकते। मिथ्या शब्द सापेक्ष है। जितने अधिक संबंध रखोगे, उतने अधिक क्लेश बढ़ेंगे। बेटा चाहता है कि पिता उसकी बात माने, और पिता चाहता है कि बेटा उसकी। जीवन में संतुलन तभी संभव है जब हम अपेक्षाओं से मुक्त हों। कार्यक्रम में क्षेत्र कमेटी अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल, महामंत्री मनोज भैसरवास, कोषाध्यक्ष प्रमोद मंगलदीप, मंत्री शैलेन्द्र ददा, राजेन्द्र हलवाई, प्रदीप रानी जैन, एस.एस.पी.एल. लीग

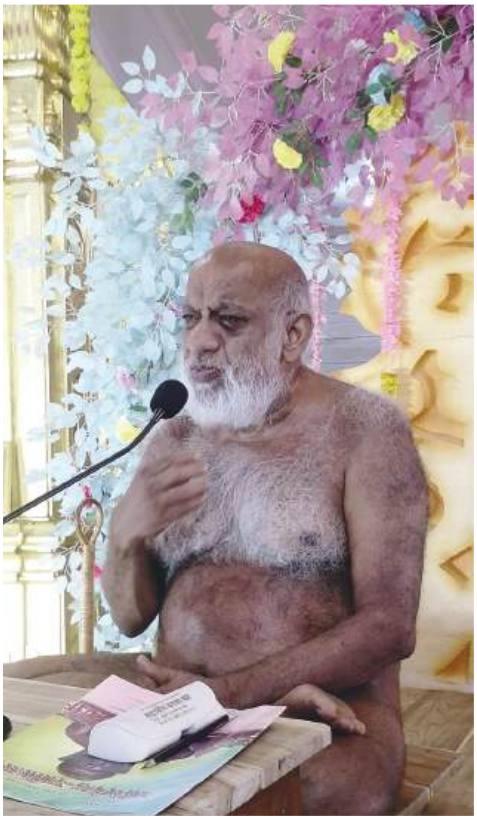

संयोजक, मीडिया प्रभारी अरविंद कचनार सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे। सभी अतिथियों का पीतवस्त्र, पगड़ी एवं स्मृति चिन्ह से सम्मान किया गया।